पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/09510 डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2024-2026 उज्जैन (म.प्र.)

UGC Care Listed and Peer Reviewed Referred Bilingual Monthly International Research Journal

प्रेषण दिनांक 30 पृष्ठ संख्या 28

आश्वस्त

वर्ष 27, अंक 260 जून 2025

कबीर गर्व न कीजिये, काल गहे कर केश।
ना जाने कित मारि है, क्या घर क्या परदेश ।।

संपादक – डॉ. तारा परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

वर्ष : 27 अंक 260
जून 2025

आश्वस्त

(सन् 1983 से निरंतर प्रकाशित)

RNI No.: MPHIN/2002/09510
ISSN : 2456-8856

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन (पंजीयन क्रमांक 2327 दिनांक 13/05/1999) की मासिक पत्रिका

संस्थापक सम्पादक
डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

संरक्षक
सेवाराम खाण्डेगर
11/3, अलखनन्दा नगर, बिड़ला हॉस्पिटल के पीछे,
उज्जैन मो.: 98269-37400

परामर्श
आयु. सूरज डामोर IAS
पूर्व सचिव-लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण वि.
म.प्र.शासन, भोपाल मो. 094253-16830

सम्पादक
डॉ. तारा परमार
9-बी, इन्द्रपुरी, सेठी नगर, उज्जैन-456010
मो. 94248-92775

सम्पादक मण्डल :
डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, गुजरात
डॉ. जसवंत भाई पण्ड्या, गुजरात
डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, म.प्र.

Peer Review Committee
डॉ. श्रवणकुमार मेघ, जोधपुर(राजस्थान)
प्रो. दत्तात्रय मुरुमकर, मुंबई (महाराष्ट्र)
प्रो. रश्मि श्रीवास्तव, उज्जैन (म.प्र.)
डॉ. बी.ए.सावंत, सांगली (महाराष्ट्र)

कानूनी सलाहकार
श्री खालीक मन्सूरी एडव्होकेट, उज्जैन

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1	अपनी बात	डॉ. तारा परमार	3
2	A Study of Educational Opportunities of Kasturba Gandhi Balika Vidyalaya Students	Dr. R. Pushpa Nameo	4
3	A Study of Human Values and spiritual intelligence for maintaining cordial relationships among academicians	Richa Asthana (Research Scholar) Dr. Asha Srivastave (Assistant Professor)	7
4	A Philosopher Bhimrao Ambedkar He is Relevant Even Today	Dr. Virender Kumar Chandoria (Assistant Professor) Dr. Pooja Singh (Assistant Professor)	13
5	Ambedkar's Thought on Caste and Untouchability	Dr. Sourav Naskar (Assistant Professor)	16
6	Ambedkar's Thought on Caste and Untouchability	Dr. Sourav Naskar (Assistant Professor)	16
7	माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा एवं सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन	डॉ. राजकुमारी गोला सहायक प्रोफेसर कु. मोनिका शोधार्थिनी	19
8	मिडिल स्टेज पर अध्यनरत सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन	डॉ. राजकुमारी गोला सहायक प्रोफेसर उमरा इदरीस शोधार्थिनी	22

UGC Care Listed Journal
खाते का नाम - आश्वस्त (Ashwast)
खाते का नं.- 63040357829
बैंक - भारतीय स्टेट बैंक,
शाखा- फ्रीगंज, उज्जैन (Freeganj, Ujjain)
IFS Code - SBIN0030108

Web : www.aashwastujjain.com
E-mail : aashwastbdsamp@gmail.com

एक प्रति का मूल्य	:	रुपये 20/-
वार्षिक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 200/-
आजीवन सदस्यता शुल्क	:	रुपये 2,000/-
संरक्षक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 20,000/-

विशेष : सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंध अवैतनिक तथा पत्रिका में प्रकाशित विचारों से सम्पादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उज्जैन रहेंगा।

weakened but not uprooted or eroded. Caste-based atrocities and discrimination exist but with the varied nature from the past. Stratification has been there among castes over the years. The idea on caste has changed conventional socialboundaries. Although the state does not validate caste-based atrocities and discrimination in any form but the incidents od caste-based discrimination take place frequently. Strict measures should be taken against any form of untouchability.

- Dr. Sourav Naskar
Assistant Professor,
Department of History,
Vidyasagar University
Midnapore, West Bengal- 721102
Contact no: 9038339905

References :

Ambedkar, B. R., Writing & Speeches, Vol. 1, Mumbai, Government of Maharashtra, 1989.

Ambedkar, B. R., Writing & Speeches, Vol. III, Mumbai, Government of Maharashtra. 1987.

Ambedkar, B. R., Writing & Speeches, Vol. VII, Mumbai, Government of Maharashtra. 1989.

Ambedkar, B. R., Writing & Speeches, Vol. XIII, Mumbai, Government of Maharashtra, 1994.

Desai, IP, Untouchability in Rural Gujarat, Bombay, Popular Prakashan, 1976.

Desai, K., and R. Paramar, "Kadi: Signs of Dalit Assertion", Economic and Political Weekly, July 1, 1995.

Elayaperumal, L., Committee on Untouchability, Economic & Educational Development of Scheduled Castes, New Delhi: Government of India, 1969.

Hazari, R.K., Untouchable: Autobiography of an Indian Outcaste, New York, Fredrick A Prapger Publishers, 1969.

Parvarthama, C., Politics and Religion, New Delhi, Sterling Publishers, 1967.

Rajasekhar, V.T., "What is 'Dalit' and 'Dalitism'?", Dalit Voice, 8(2), December, 1989.

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा एवं सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन

– डॉ. राजकुमारी गोला
सहायक प्रोफेसर

– कु. मोनिका
शोधार्थिनी

सार – शिक्षा मानव जीवन के विकास की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो शैशवावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक चलती रहती है। यह व्यक्ति और समाज दोनों के विकास में अपना योगदान देती है। शिक्षा का कार्य मानवीय जीवन को सुखमय, संपन्न और समृद्ध बनाना है, इसके लिये शिक्षा मानव का शारीरिक, बौद्धिक, सांवेगिक, आध्यात्मिक और नैतिक विकास करती है और उनकी आवश्यकताओं, आकांक्षाओं, मूल्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान देती है। इन्ही तथ्यों को दृष्टिगत करते हुए प्रस्तुत शोध पत्र में विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा एवं उनकी सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन किया गया है सर्वेक्षण पद्धति के अन्तर्गत प्रतिदर्श विधि द्वारा 286 छात्र एवं छात्राओं का चयन किया गया है।

बीजक शब्द :– अभिप्रेरणा, सांवेगिक बुद्धि, शैक्षिक उपलब्धि एवं नैतिक ।

प्रस्तावना :–

मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक विकास की अनेक अवस्थायें होती है। पूर्व शैशवावस्था, बाल्यवस्था, किशोरावस्था, युवावस्था, प्रौढावस्था तथा वृद्धावस्था । मानवविकास की विभिन्न अवस्थाओं में किशोरावस्था सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवस्था है। विकासात्मक मनोवैज्ञानिकों ने किशोरावस्था को अधिक महत्वपूर्ण अवस्था बताया है इस अवस्था में किशोरों में महत्वपूर्ण शारीरिक विकास, सामाजिक विकास, सवेगात्मक विकास, मानसिक विकास तथा संज्ञानात्मक विकास होते है। यह वह अवस्था है जिसका छात्रों में तात्कालिक प्रभाव तथा दीर्घकालिन प्रभाव दोनों ही देखने को मिलता है। इस अवस्था में शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों तरह के प्रभाव बहुत स्पष्ट रूप से उभरकर आते है। तीव्र मानसिक विकास होने के कारण बालक समाज में अपने आपको संगठित मानता है तथा एक नई अभिवृत्ति अभिप्रेरणा. प्रत्यय, मूल्य तथा अभिरूचि विकसित करने में सक्षम हो पाता है । इस अधिक परिपक्व तथा सामाजिक होती है, को ग्रहण करता है। इस अवस्था में किशोर अधिक संवेदनशील होते है किशोरावस्था में सांवेगिक तनाव अपनी चरम सीमा पर होता है। इसलिये इसे आधी और तनाव की अवस्था भी कहा जाता है। इस प्रकार बालकों के विकास की विभिन्न अवस्थाओं में जो शारीरिक विकास, सामाजिक विकास, सांवेगिक विकास, मानसिक विकास तथा संज्ञानात्मक विकास होते है उनमें काफी भिन्नता होती है। इन भिन्नताओं का ज्ञान होने से शिक्षक को यह अनुमान लगाने में सुविधा होती है कि उन्हें किस अवस्था में क्या उम्मीद करनी चाहिये। किशोरावस्था में होने वाले विभिन्न परिवर्तनों का ज्ञान माता पिता व शिक्षक के लिये मूल पूँजी होती है जिसके आधार पर उन्हें किशोरों का मार्गदर्शन करने में आसानी हो जाती है। साथ ही वे उनके समायोजन संबंधी समस्याओं का निदान करने में भी सफल होते है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व : शिक्षा सामाजिक शैली को प्रतिबिन्धित करती है। शिक्षा को जीवन से पृथक नहीं किया जा सकता। यदि प्रगति ही जीवन है तो शिक्षा इस प्रगति को उचित दिशा में नियंत्रित एवं संचालित करती है तथा बालक को उसके पर्यावरण के साथ समायोजन करना सिखाती है। यदि बालक में समायोजन करने की क्षमता नहीं होगी तो वह उसके व्यक्तित्व के विकास में बाधा उत्पन्न करेगी। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बालक की कुशलता एवं दक्षता के मापन के आधार पर उन्हें उपलब्धि प्राप्त करने के समुचित अवसर प्रदान करना है। प्रत्येक बालक के जीवन की सफलता उनके मानसिक, सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक कारको आदि से प्रभावित होती है। यह सभी कारक बालक के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उपलब्धि प्राप्त करने हेतु एक महत्वपूर्ण अभिप्रेरक का कार्य करते है। अतः अभिप्रेरणा का जीवन की सपूर्ण उपलब्धि के साथ घनिष्ट सम्बंध होता है। विद्यार्थियो के आत्म सम्प्रत्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन करना प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है।

शोध समस्या कथन :– "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा एवं सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन।''

शोध अध्ययन के उदेश्य :–

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा का अध्ययन करना ।

2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन करना ।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें :–

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नही है।

2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शोध अध्ययन विधि : प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि के अन्तर्गत प्रतिदर्श विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन की जनसंख्या एवं न्यादर्श :– प्रस्तुत अध्ययन में मुरादाबाद जनपद के समस्त माध्यमिक शिक्षण संस्थओं को जनसंख्या माना गया है। शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध कार्य के लिए न्यादर्ष का आकार कुल जनसंख्या का 10 प्रतिशत रखने का निर्णय लिया है, जिसमें कुल 286 छात्र एवं छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

शोध अध्ययन का सीमांकन :–

प्रस्तुत अध्ययन की भी कुछ सीमाएं निश्चित की गई है, जो कि राज्य सरकार द्वारा संचालित मुरादाबाद जनपद के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के कक्षा 10 के विद्यार्थियों को चयनित किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या :–

परिकल्पना–1 "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नही है।" इस सम्बन्ध में निर्मित तालिका संख्या 1 प्रस्तुत है–

तालिका संख्या – 1
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा का विश्लेषण

परिगणित मूल्य	आत्म सम्प्रत्यय का विश्लेषण	
	छात्र	छात्राऐं
विद्यार्थियों की संख्या	260	26
माध्य	41.31	44.81
प्रमाणिक विचलन	16.31	14.29
माध्य अन्तर	3.50	
प्रमाप विभ्रम	2.98	
क्रान्तिक अनुपात	1.17	
सारणी मूल्य (0.05 स्तर पर)	1.96	
सार्थकता	1.17<1.96 (निरर्थक)	
परिकल्पना	स्वीकृत	

तालिका स. 1 से स्पष्ट है कि छात्रों के औसत प्राप्ताकं 41.31 तथा छात्राओं के औसत प्राप्ताकं 44.81 है। दोनों का माध्य अन्तर 3.50 है। माध्य अन्तर का प्रमाप विभ्रम 2.98 है। परिगणित क्रान्तिक अनुपात 1.17 है जो 0.05 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर निर्धारित सारणी मूल्य 1.96 से कम है। अतः अन्तर सार्थकता के 0.05 स्तर पर निरर्थक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना स्वीकृत हुई है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नही है। तालिका संख्या 1 से ज्ञात होता है कि छात्रों एवं छात्राओं के अभिप्रेरणा प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 41.31 एवं 44.81 हैं तथा मानक विचलन क्रमशः 16.31 एवं 14.29 है । सांख्यिकीय विश्लेषण करने पर टी – मान 0.05 प्राप्त हुआ जो 0.05 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर साथर्क नहीं है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नही है, स्वीकार की जाती है। अर्थात दोनों मध्यमान साथर्क रुप से भिन्न नहीं है। मध्यमानों में जो भी अन्तर दिखाई देता है वह संयोगवश है ।

परिकल्पना–2 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।" इस सम्बन्ध में तालिका स. 2 प्रस्तुत है–

तालिका संख्या – 2
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि का विश्लेषण

परिगणित मूल्य	शैक्षिक उपलब्धि का विश्लेषण	
	छात्र	छात्राऐं
विद्यार्थियों की संख्या	260	26
माध्य	52.92	50.77
प्रमाणिक विचलन	7.29	7.06
माध्य अन्तर	2.15	
प्रमाप विभ्रम	1.45	
क्रान्तिक अनुपात	1.48	
सारणी मूल्य (0.5 स्तर पर)	1.96	
सार्थकता	1.48<1.97 (निरर्थक)	
परिकल्पना	स्वीकृत	

परिकल्पना परीक्षण के लिए छात्रों एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि से सम्बन्धित प्राप्तांकों के माध्य अंक अलग–अलग ज्ञात करके उनका प्रमाप विचलन ज्ञात कर, प्रमाप विभ्रम के द्वारा क्रान्तिक अनुपात ज्ञात किया गया है। तालिका स. 2 से स्पष्ट है कि छात्रों एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि से सम्बन्धित औसत प्राप्तांक क्रमशः 52.92 तथा 50.77 हैं तथा प्रमाप विचलन क्रमशः 7.29 एवं 7.06 है। दोनों मध्यमानों की तुलना करने पर टी– मान 1.48 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है। स्वीकार की जाती है ।

शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष : – परिकल्पनाओं का परीक्षण करने के पश्चात निष्कर्ष

प्राप्त होता है कि छात्र एवं छात्राओं की अभिप्रेरणा में कोई साथर्क अन्तर नहीं है। अर्थात छात्र एवं छात्राओं की अभिप्रेरणा समान स्तर का पायी गयी। छात्र एवं छात्राओं की अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं है । अर्थात छात्र एवं छात्राओं की अभिप्रेरणा में कोई विशेष अन्तर नहीं है जो भी अन्तर दृष्टिगोचर हो रहा है वह संयोगवश है। छात्रों की सांवेगिक बुद्धि छात्राओं की अपेक्षा अधिक उच्च है। छात्रों की सांवेगिक बुद्धि में छात्राओं की अपेक्षा सकारात्मक प्रबलता है। छात्रों की सांवेगिक बुद्धि छात्राओं से अधिक सकारात्मकता लिये हुए है ।

– डॉ. राजकुमारी गोला
सहायक प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

– कु. मोनिका शोधार्थिनी
शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद
मोबा. 7668206043

संदर्भ :

- चौहान, आर एंव पी0डी0 (2015) अग्रवाल पब्लिकेषन्स आगरा–2 प्रथम संस्करण (2015–16) 98–102।
- डॉ माथुर, एस0एस0 (2011) षिक्षा के दार्षनिक तथा सामजिक आधार, अग्रवाल पब्लिकेषन्स आगरा–2।
- दीक्षित, एस0 (1989) शैक्षिक उपलब्धि पर व्यक्तित्व कारकों, बुद्धि एवं आत्म सम्प्रत्य का प्रभाव अप्रकाषित शोध प्रबंध मनोविज्ञान, आगरा विष्वविद्यालय, आगरा।
- वर्मा, पी0 एव श्रीवास्तव, डी0एन0 (2014) आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान, आगरा पब्लिकेषन्स, सोलहवॉ संस्करण 216–223।
- शर्मा, आर0ए0 (2005) षिक्षा अनुसंधान, सूर्या पब्लिकेषन्स, आर. लाल बुक, डिपो, मेरठ संस्करण (2005), 29–32।
- सिंह ए0के0 (2013) उच्चतर सामन्य मनोविज्ञान, पटना विष्वविद्यालय पटना, षष्टम संस्करण (2013), पेज नं 142–145।
- Deshpande, M.B. (1984), An analytic study of cognitive affective development and scholastic achievement of tribal secondary school students. Unpublished Ph.D. thesis. Nagpur University. Nagpur.
- Montisi, M.R. (1979), A study of the self-concept of Basotho male and female adolescents in secondary schools. Dissertation Abstracts International, 39 (8).

मिडिल स्टेज पर अध्यनरत सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन

– डॉ. राजकुमारी गोला
सहायक प्रोफेसर

– उमरा इदरीस
शोधार्थिनी

सार : आकांक्षा स्तर एक ऐसा भाव है । जो किसी भी विद्यार्थी को उसके भविष्य में क्या करना है कैसे करना है उसके उपलक्ष में उसके प्रबल भाव को अपने अंदर बनाए रखने से है । विद्यार्थी अपने आने वाले भविष्य में क्या बनना चाहता है ? क्या करना चाहता है? वह अपने भविष्य को किस प्रकार जीना चाहता है? उसे